8

प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता का अध्ययन

अनु जी.एस.*
लता**
पी.डी. सुभाष***

ज्ञान के अर्जन के लिए भाषा के शुद्ध प्रयोग की आवश्यकता होती है जिसके निरंतर अभ्यास के लिए अध्यापक के मार्गदर्शन को आवश्यक माना गया है। वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में शुद्ध वर्तनी या लेखनी के अभ्यास की कमी का अनुभव किया गया है, जिसके निवारण में प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता का अध्ययन करने के उद्देश्य से ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान से डी.एल.एड. के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के कुल 40 शिक्षक-प्रशिक्षुओं पर सर्वेक्षण विधि द्वारा अध्ययन किया। शोधार्थी ने इन शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी को मापने के लिए हिंदी भाषा निपुणता परीक्षण पत्र में उनकी हिंदी भाषा में मात्राओं, स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक स्वर, संयुक्त एवं द्वित्व व्यंजन, रेफ प्रयोग, लिंग, वचन एवं विभक्ति, ध्वनियों, विराम चिह्नों आदि सहित अनुच्छेदों एवं कहानी लेखन से संबंधित वर्तनी की जाँच की। इस निपुणता परीक्षण पत्र में यह पाया गया कि शिक्षक-प्रशिक्षुओं के भाषा ज्ञान एवं वर्तनी निपुणता में कमी का मुख्य कारण स्वर एवं व्यंजनों के ज्ञान की कमी, मात्राओं के उचित प्रयोग से अनभिज्ञता तथा उनके व्यावहारिक प्रयोग की कमी है। शिक्षक-प्रशिक्षुओं में व्याकरण के ज्ञान का अभाव, अनुस्वार तथा अनुनासिक स्वर के सही प्रयोग के ज्ञान की कमी तथा प्रादेशिकता का प्रभाव देखा गया। लापरवाही एवं विराम चिह्नों के उचित प्रयोग संबंधी ज्ञान की कमी अनुभव की गई। प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं में भाषिक ज्ञान की कमी के कारण रचनात्मक क्षमता में भी कमी पाई गई।

भाषा एक सामाजिक क्रिया है, जो समाज में विचार-विनिमय का साधन है। व्यक्ति, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए जिन ध्वनि-संकेतों का व्यवहार करता है उसे भाषा कहते हैं। यह अर्जित संपति है जो सामाजिक साहचर्य द्वारा सीखी जाती है। यह व्यक्ति के संवेगात्मक विकास में सहायक होती है। भाषा न केवल साहित्य सृजन के लिए अपितु अन्य विषयों के ज्ञान-प्राप्ति में माध्यम

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, डिपार्टमेंट ऑफ़ टीचर एजुकेशन, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ हिमाचल प्रदेश
***शोधार्थी*, शिक्षा विभाग स्कूल ऑफ एजुकेशन, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हिमाचल प्रदेश
****एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प.प्र., नयी दिल्ली

का कार्य करती है। ज्ञानार्जन का मुख्य आधार होने के कारण भाषा शिक्षा के समस्त क्रियाकलापों का भी आधार है। यह अभिव्यक्ति के साथ-साथ गहन चिंतन, संस्कृति और साहित्य सृजन का भी माध्यम है। भाषिक संप्रेषण की प्रक्रिया व्यक्ति के विचारों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसके लिए भाषा का शुद्ध होना अति आवश्यक है। यदि भाषा शुद्ध न हो तो वह उचित एवं सार्थक संकेत देने में असमर्थ होती है। बच्चे भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान विद्यालय में आकर ही प्राप्त करते हैं। ज्ञान प्राप्ति के सशक्त माध्यम के रूप में भाषा बच्चे को अन्य सभी विषयों में आगे बढ़ने में सहायक होती है। विद्यार्थी द्वारा अपने भविष्य को साकार करने के लिए सर्वप्रथम अपनी भाषा को सुदृढ़ बनाना पड़ता है।

वर्तनी शब्द संस्कृत भाषा का है जिसे अक्षर-विन्यास, लेखनी, हिज्जे और लिपि के नाम से भी जाना जाता है और जो भाषा के लिखित रूप से संबंधित है। "भाषा-साम्राज्य के अंतर्गत भी शब्दों की सीमा में अक्षरों की जो आचार-संहिता अथवा उनका अनुशासनगत संविधान है, उसे ही हम वर्तनी की संज्ञा दे सकते हैं। वर्तनी भाषा का वर्तमान है, वर्तनी भाषा का अनुशासित आवर्तन है, जो शब्दों का संस्कारित पद विन्यास है। यह अतीत और भविष्य के मध्य का सेतु-सूत्र है" (भाटिया, 2019)।

हिंदी भाषा का सबसे बड़ा गुण ध्वन्यात्मकता है जिसके कारण हिंदी में उच्चारित ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा आसान है। जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा भी जाता है। डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया के अनुसार, "हिंदी की वर्णमाला पूर्णतः ध्वन्यात्मक होने के कारण हिंदी की वर्तनी की समस्या उतनी गंभीर नहीं जितनी अंग्रेज़ी की है, क्योंकि हिंदी में आज भी लिखित रूप में शब्द अपने उच्चरित रूप से अधिक भिन्न नहीं हैं" (भाटिया, 2019)।

किसी भाषा का मानक रूप ही प्रतिष्ठित माना जाता है जो सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतीक होती है तथा सुशिक्षित समाज द्वारा स्वीकृत होती है। वर्तनी की समस्या पर नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने सर्वप्रथम व्यवस्थित ढंग से विचार-विमर्श किया। विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों द्वारा भारतीय हिंदी परिषद् में बड़े विस्तार से इस पर विमर्श हुआ। राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने पर हिंदी में लिपि, वर्तनी और अंकों के स्वरूप में एकरूपता लाने के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने विविध स्तरों पर प्रयास किया। हिंदी के मानक रूप को स्थिर करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने *सरस्वती* पत्रिका के माध्यम से अभूतपूर्व योगदान दिया। सन् 1967 में शिक्षा मंत्रालय ने विचार-विमर्श वर्तनी संबंधी संस्तुतियों को *हिंदी वर्तनी का मानकीकरण* शीर्षक नामक पुस्तिका में प्रकाशित किया तथा सन् 1980 में हिंदी के संख्यावाचक शब्दों को मानक रूप प्रदान किया। इस प्रकार हमारे समक्ष वर्तनी का शुद्ध एवं मानक रूप प्रस्तुत हुआ।

एक भाषा के अंतर्गत भाषायी क्षमता का संबंध उन बुनियादी कौशल से है जिनकी आवश्यकता उन स्थितियों में होती है जिनमें ऊँचे स्तर के संज्ञान (बौद्धिकता) की ज़रूरत नहीं होती। लोगों के साथ संवाद के लिए इन्हीं बुनियादी कौशलों की आवश्यकता होती है। अलग-अलग भाषाओं में इन कौशल से जुड़ी क्षमता का अर्जन लगभग नए सिरे से होता है। परंतु भारत जैसे बहुभाषी समाजों में लोग

भाषा-अर्जन की सहज प्रक्रिया में ही ये क्षमताएँ सीख जाते हैं, चूँकि ये क्षमताएँ लोगों की मातृभाषा से जुड़ी हुई हैं। संज्ञानात्मक निपुणता से जुड़ी क्षमताओं की ज़रूरत उन स्थितियों में होती है जिनका संदर्भ समृद्ध नहीं होता तथा जो ऊँचे संज्ञान-स्तर की माँग करती हैं। ये क्षमताएँ प्रायः शिक्षक के मार्गदर्शन में अर्जित की जाती हैं। उदाहरण के लिए, जब प्राथमिक, माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी को किसी ऐसे विषय पर निबंध लिखने को कहा जाए जिसकी जानकारी उसे नहीं है या उसे किसी लेख की समीक्षा करने की दृष्टि से पढ़ने को कहा जाए तो उसे संज्ञानात्मक निपुणता से जुड़ी क्षमताओं की सहायता लेनी पड़ेगी। इन क्षमताओं का संबंध विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की भाषा वर्तनी निपुणता से होता है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्कूली शिक्षा पूरी होने तक विद्यार्थी कम-से-कम तीन भाषाओं के संदर्भ में यह संज्ञानात्मक निपुणता हासिल कर लें।

भाषिक निपुणता एक विद्यार्थी एवं शिक्षक, दोनों के जीवन में अति आवश्यक कौशल है जो उनके ज्ञान को एक उचित श्रेणी में दर्शाता है। जो व्यक्ति शुद्ध भाषा का प्रयोग नहीं करते, लोग श्रोता के रूप में उन्हें नहीं सुनते और इससे उनके ज्ञान के औचित्य पर प्रश्न खड़ा हो जाता है। इस प्रकार भाषा के शुद्ध प्रयोग द्वारा ही व्यक्ति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होता है। शिक्षण के क्षेत्र में एक अध्यापक का शुद्ध भाषा वर्तनी प्रयोग करना भी अति आवश्यक है, क्योंकि इस भाषा के माध्यम से ही अध्यापक अपने ज्ञान के औचित्य को सिद्ध कर सकते हैं। आज स्थिति ऐसी है कि शिक्षकों में भाषिक निपुणता का अभाव पाया जा रहा है और इसका प्रभाव देश के भावी निर्माताओं अर्थात् कक्षाओं के विद्यार्थियों पर पड़ता है। वह भी वही सीखते हैं जो उन्हें उनके अध्यापक के व्यावहारिक प्रयोग में दिखता है। इस प्रकार प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा वर्तनी में सुधार लाने के लिए उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों को सेवापूर्व एवं सेवाकालीन शुद्ध हिंदी भाषा वर्तनी से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* भी शिक्षकों के प्रशिक्षण में दृढ़ता की बात करती है जिसमें कार्यकाल के दौरान आवश्यक कार्यशाला, रिफ्रेशर कोर्स, प्रशिक्षण एवं संगोष्ठियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन किया गया है।

प्राथमिक स्तर से यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थी विभिन्न रचनाओं को पढ़कर उनमें दर्शायी गई सोच, पूर्वाग्रह और सरोकार आदि को पहचान सकें। अध्यापकों का यह प्रयास होना चाहिए कि इस स्तर के पूर्ण होने तक शिक्षार्थी किसी भाषा, व्यक्ति, वस्तु, स्थान, रचना आदि का विश्लेषण करने, उसकी व्याख्या करने तथा उस व्याख्या को आत्मविश्वास व स्पष्टता से अभिव्यक्त करने में अभ्यस्त हो जाएँ। भाषा के क्षेत्र में शिक्षकों का यह प्रयास होना चाहिए कि विद्यार्थी रचनात्मक और सृजनात्मक ढंग से भाषा का प्रयोग करना सीख जाएँ परंतु वास्तविक स्थिति इसके विपरीत प्रतीत होती है। आज के समय में प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के भाषा संबंधी पठन एवं लेखन को देखें, तो यह अनुभव होता है कि विद्यार्थी शुद्ध रूप से पढ़ने एवं लिखने में असमर्थ हैं। उनके अशुद्ध उच्चारण, अभ्यास में कमी, वर्णमाला एवं व्याकरण के ज्ञान की कमी का प्रभाव उनकी वर्तनी पर पड़ता है।

प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर के छात्रों की हिंदी भाषा वर्तनी में सुधार लाने के लिए उन्हें पढ़ाने वाले भावी शिक्षकों अर्थात शिक्षक-प्रशिक्षुओं

को उनके प्रशिक्षण के दौरान ही शुद्ध भाषिक प्रयोग एवं शुद्ध वर्तनी में सक्षम बनाना चाहिए। इस संबंध में सिंह (2001) ने अपने अध्ययन में दर्शाया है कि प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थी वर्तनी, शब्दावली एवं वाक्य निर्माण में कई त्रुटियाँ करते हैं जिसका मुख्य कारण अध्यापक की अज्ञानता, लापरवाही, अन्य कार्यों में संलग्न रहना, अध्यापक एवं छात्र अनुपात का उचित न होना पाया गया है। इनके अनुसार, यदि अध्यापक इन विद्यार्थियों को संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया-विशेषण, विभक्ति और समुच्चयबोधक शब्दों एवं इनके शुद्ध प्रयोग का उचित ज्ञान एवं अभ्यास करवाएँ तो इन त्रुटियों को सुधारा जा सकता है। सेतिनाव्की एवं यावुज़ (2010) ने अपने अध्ययन 'लैंग्वेज प्रोफ़िसिएंसी लेवल ऑफ़ इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स ट्रेनिज़ इन टर्की' में पाया कि शिक्षक-प्रशिक्षु संपूर्ण प्रशिक्षण के दौरान अंग्रेज़ी भाषा में निपुणता के गिरते स्तर की समस्या अनुभव करते हैं जो पाठ्यक्रम संबंधित है तथा शिक्षण अभ्यास कार्य के दौरान अधिक अनुभव की जाती है। इसी कारण शिक्षक-प्रशिक्षु विद्यालयी विद्यार्थियों के समक्ष स्वयं को अक्षम महसूस करते हैं। केजक्लेर एवं हाल (2012) ने अपने अध्ययन में दर्शाया कि बहुभाषिक कक्षा एवं फ्रेंच पढ़ने वाले बच्चों की कक्षा में अंग्रेज़ी पढ़ाते समय अध्यापक को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति में इस प्रकार की कक्षा को पढ़ाने वाले शिक्षक-प्रशिक्षु एवं नए शिक्षकों की भाषिक क्षमता की प्रभावशीलता बहुत कम पाई गई है। केवल एक-तिहाई शिक्षकों में उच्च स्तर की भाषिक क्षमता एवं प्रवीणता को देखा गया। 15 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने पैतृक भाषा की सहायता से अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण का कार्य संपन्न किया। कुछ प्रशिक्षु केवल अभिज्ञेय भाषिक क्षमता का ही प्रदर्शन कर पाए। प्रधान (2013) ने अपने शोध पत्र 'डायग्नोस्टिक इवैल्युएशन एंड रेमेडियल प्रोग्राम फ़ॉर इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग टू प्रोस्पेक्टिव टीचर्स' में कहा कि अंग्रेज़ी भाषा के शिक्षण के दौरान शिक्षक-प्रशिक्षु भाषा संबंधी कई त्रुटियाँ करते है जो पठन एवं लेखन की अपेक्षा व्याकरण के शुद्ध प्रयोग से संबंधी हैं। इन्होंने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि शिक्षक-प्रशिक्षु भाषा के शुद्ध ज्ञान के अभाव में जो त्रुटियाँ कर रहे हैं, वे हैं — भाषिक दोहराव, विलोपन, शब्द लोप, संकोच या संशय, स्वरों तथा व्यंजनों के अशुद्ध उच्चारण एवं वाक्य निर्माण संबंधी समस्याएँ। इसका प्रमुख कारण मातृभाषा एवं प्रादेशिक भाषा का प्रभाव होना है। अंदलीब (2018) ने अपने अध्ययन में शुद्ध वर्तनी शिक्षण में प्राथमिक स्तर पर अध्यापक की भूमिका के महत्व को दर्शाते हुए भावी अध्यापकों के प्रथम वर्ष के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों को मापा है तथा इन अशुद्धियों के निराकरण में उपचारात्मक कार्यक्रम की आवश्यकता को दर्शाया है।

यदि विद्यार्थी को समृद्ध व पर्याप्त भाषायी अनुभव तथा तनावमुक्त वातावरण मिलता है तो वह सहज रूप से भाषा का व्याकरण रच सकता है। जैसाकि क्राशेन ने कहा है कि उपलब्ध भाषा को विद्यार्थी तभी आत्मसात कर सकता है जब आसपास के लोगों या अध्यापक का व्यवहार सकारात्मक हो और उनमें स्वयं सीखने की प्रेरणा हो। यह भी पाया गया है कि अपने लिखे हुए को संपादित करने की आज़ादी और समय मिलने पर बच्चे उपलब्ध भाषा-अनुभव में भी सुधार करने की कोशिश करते हैं। जब से संज्ञानात्मक प्रगति के अपेक्षाकृत क्रमबद्ध चरणों पर बल दिया जाने लगा है, भाषागत अशुद्धियों

के प्रति शिक्षकों के व्यवहार में अंतर आया है। अब वे भाषा सीखने की प्रक्रिया को सहज व अनिवार्य चरण के रूप में देखते हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के केंद्र में विद्यार्थियों को रखने का एक परिणाम यह भी हुआ है कि उनकी मातृभाषाओं को सम्मान दिया जाने लगा है और उन्हें सशक्त संज्ञानात्मक संसाधन के रूप में देखा जाने लगा है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषिक ज्ञान की स्थिति इतनी दयनीय है जो उनके अन्य विषयों के ज्ञान के मार्ग में अवरोधक बन रही है। भाषा ज्ञान विद्यार्थियों के पढ़ने और लिखने की कुशलता से संबंधित है। कृष्ण कुमार के अनुसार, "पढ़ना बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास का हिस्सा नहीं बन पाता। परिणामस्वरूप बच्चे पढ़ना सीखकर भी पाठक नहीं बन पाते। यह एक बड़ी विफलता है और अध्यापक चाहे तो इसका निवारण कर सकता है।" उनके अनुसार, "लाखों बच्चों को लिखना एक यांत्रिक कौशल की तरह सिखाया जा रहा है, जिसमें अध्यापक छात्रों को पूरी वर्णमाला आकृतियों की बारम्बार नकल करते हुए सिखाने का प्रयत्न करता है। बाद में जब उनसे शब्द लिखने या वाक्य बनाने के लिए कहा जाता है तो वे अध्यापक का मुँह ताकते हैं कि वे लिखें क्या?" (कुमार, 2018)

इस तरह प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के क्षेत्र में विद्यार्थी जो अशुद्धियाँ कर रहे हैं वे उचित ज्ञान, निरीक्षण एवं संशोधन के अभाव में विद्यार्थियों के साथ उच्च स्तर तक चलती रहती हैं। इसी कारण विद्यार्थियों को प्रत्येक स्तर पर हिंदी भाषा के शुद्ध उच्चारण और वर्तनी की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों की इन भाषागत समस्याओं के समाधान में अध्यापक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अध्यापक के शुद्ध ज्ञान, प्रेरणा और संरक्षण में रहकर विद्यार्थी शुद्ध भाषा का प्रयोग करना सीख पाएँगे। परंतु दुविधा यह है कि शुद्ध भाषिक ज्ञान के अभाव, प्रादेशिक भाषा के प्रभाव, व्याकरण की अज्ञानता, लापरवाही, अँग्रेज़ी भाषा के प्रति आकर्षण और प्रयत्न-लाघव के कारण शिक्षक वर्ग भी शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करने में असमर्थ पाया जा रहा है। प्राथमिक भाषिक ज्ञान की आधारशिला प्राथमिक स्तर है। इस स्तर पर सीखी गई भाषा भविष्य में सीखे जाने वाले ज्ञान की आधारशिला है। इस तरह प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शिक्षण में सहायक हिंदी शिक्षण के लिए प्रशिक्षण ले रहे शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी निपुणताओं का अध्ययन करना आवश्यक है। शिक्षक-प्रशिक्षु शिक्षण के कौशल एवं विभिन्न विधियों को सीखते हुए विद्यालयी विद्यार्थियों के साथ अधिगम अनुभव ग्रहण करते हुए भाषा संबंधी अशुद्धियाँ एवं समस्याओं को अनुभव करते हैं। इसके कारण वह अपने शिक्षण संबंधी कौशल एवं निपुणताओं को निखारने में असमर्थ रहते हैं। इस प्रकार ऐसे शिक्षक अपने शिक्षण के दौरान भावी विद्यार्थियों की भाषागत अशुद्धियों को दूर करने में असमर्थ होते हैं। इन अशुद्धियों के कुछ विशेष कारण हैं जिनका संबंध प्रथम रूप में क्षेत्रीय प्रभाव से है जिससे वे अशुद्ध उच्चारण को अपनाते हुए लेखनी में दर्शाते हैं अर्थात् जो अशुद्ध लेखन को जन्म देता है। दूसरे रूप में, विद्यार्थी अशुद्ध वाचन और लेखन इसलिए भी करते हैं क्योंकि अध्यापकों ने इस ओर विशेष ध्यान ही नहीं दिया होता है (दाहिया, 2014)।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी ने उपयुक्त संबंधित साहित्यों के पुनरावलोकन एवं अध्ययन की

आवश्यकता एवं महत्व के आधार पर शोध समस्या को "प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी निपुणता का अध्ययन" नामक समस्या कथन से अंकित किया है।

परिचालन परिभाषा

प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षु— प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए प्रशिक्षण ले रहे विद्यार्थी ही प्राथमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षु हैं। हिमाचल प्रदेश में स्थित काँगड़ा ज़िला के ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा डी.एल.एड. अर्थात् प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा में प्रशिक्षण एवं अध्ययनरत शिक्षार्थी।

वर्तनी— भाषा के लिखित रूप को वर्तनी कहा जाता है जिसमें व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग अनिवार्य होता है। वर्तनी में भाषा के मानक रूप के प्रयोग को दर्शाया गया है।

वर्तनी निपुणता— वर्तनी निपुणता के अंतर्गत भाषा के शुद्ध लिखित रूप के प्रयोग की सक्षमता को दर्शाया गया है। इसमें शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा प्रयुक्त हिंदी भाषा की वर्तनी की निपुणता के परीक्षण की बात की गई है।

अध्ययन का अनुसंधानात्मक प्रश्न

प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी की निपुणता का वर्तमान स्तर क्या है?

अध्ययन के उद्देश्य

- अध्ययन वर्ष के आधार पर प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता का मापन करना।
- प्रादेशिकता के आधार पर प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं की हिंदी वर्तनी की निपुणता में अंतर का अध्ययन।

अध्ययन का सीमांकन

- इस अध्ययन का सीमांकन केवल हिमाचल प्रदेश के ज़िला काँगड़ा तक किया गया है।
- यह अध्ययन केवल हिमाचल प्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में चल रहे डी.एल.एड. कार्यक्रम में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षुओं तक सीमित है।
- यह अध्ययन केवल हिमाचल प्रदेश के ज़िला काँगड़ा स्थित सरकारी ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तक ही सीमित है।

शोध प्रविधि

शोध के अध्ययन के लिए शोधार्थी ने प्रदत्तों के संकलन हेतु विवरणात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जिसके द्वारा समस्या का मापन, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं विवेचन किया गया। इसमें सर्वेक्षण करने के लिए शोधार्थी ने शोध पर्यवेक्षक की सहायता से स्वयं निर्मित हिंदी निपुणता परीक्षण पत्र का प्रयोग किया जिसकी सामग्री वैधता का निर्धारण विषय विशेषज्ञ की सहायता से किया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में लक्ष्य जनसंख्या हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा ज़िले में स्थित डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत समस्त शिक्षक-प्रशिक्षु हैं। इस शोध के लिए हिमाचल प्रदेश के ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के कुल 40 (19 पुरुष तथा 21 महिला) शिक्षक-प्रशिक्षुओं का अध्ययन किया गया। न्यादर्श के चयन हेतु सरल यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक (simple random sampling technique) के अंतर्गत लॉटरी विधि का प्रयोग किया गया।

तालिका 1— ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, धर्मशाला में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षुओं की जनसांख्यिकीय रूपरेखा

जेंडर	प्रथम वर्ष		द्वितीय वर्ष		कुल	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
पुरुष	10	50	9	45	19	47.5
महिला	10	50	11	55	21	52.5
कुल	20	100	20	100	40	100

शोध उपकरण का निर्माण एवं प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया

प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनी संबंधी निपुणताओं का अध्ययन करने के लिए शोधार्थी ने शोध पर्यवेक्षक की सहायता से हिंदी वर्तनी निपुणता परीक्षण पत्र का निर्माण किया जिसकी विषय या सामग्री वैधता की जाँच विषय विशेषज्ञ की सहायता से की गई। इस पत्र में हिंदी भाषा में मात्राओं, स्वर, व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक स्वर, संयुक्त एवं द्वित्व व्यंजन, रेफ प्रयोग, लिंग, वचन एवं विभक्ति, ध्वनियों, विराम चिह्नों आदि सहित अनुच्छेदों एवं कहानी लेखन से संबंधित वर्तनी की जाँच की गई। इस पत्र द्वारा प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी की निपुणता का अध्ययन किया गया। इसमें शिक्षक-प्रशिक्षुओं का जेंडर, प्रादेशिकता एवं परीक्षण पत्र में प्राप्त अंकों के आधार पर अध्ययन एवं मापन किया गया।

प्रदत्तों का जनसांख्यिकीय रूपरेखा संबंधी विवरण

उपरोक्त तालिका 1 में पाया गया है कि प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी निपुणता के अध्ययन के लिए शोधार्थी ने ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, धर्मशाला, काँगड़ा से न्यादर्श के रूप में 40 शिक्षक प्रशिक्षुओं पर अध्ययन किया जिसमें प्रथम वर्ष से 20 तथा द्वितीय वर्ष से 20 शिक्षक प्रशिक्षु सम्मिलित थे।

तालिका 1 में यह दर्शाया गया है कि प्रथम वर्ष से 20 शिक्षक प्रशिक्षुओं में 50 प्रतिशत पुरुष तथा 50 प्रतिशत महिला शिक्षक प्रशिक्षु सम्मिलित थे। इसके साथ ही द्वितीय वर्ष से 20 शिक्षक-प्रशिक्षुओं में 45 प्रतिशत पुरुष एवं 55 प्रतिशत महिला शिक्षक प्रशिक्षु सम्मिलित थे। इस वर्णन को आरेख 1 में निम्न प्रकार से दर्शाया गया है।

आरेख 1— ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, धर्मशाला, काँगड़ा में प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षुओं की जेंडर आधारित आरेखीय प्रस्तुति

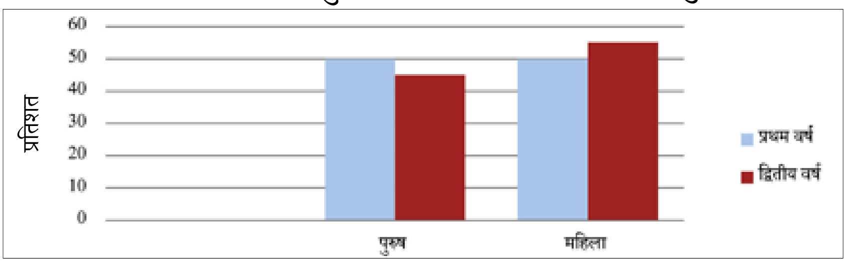

आरेख 1 से यह स्पष्ट है कि वर्तमान अध्ययन के लिए शोधार्थी ने प्रथम वर्ष से कुल 10 पुरुष एवं 10 महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं सहित द्वितीय वर्ष से कुल 9 पुरुष एवं 11 महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं में अध्ययन किया। जिसके द्वारा यह पाया गया कि प्रथम वर्ष से 50 प्रतिशत पुरुष एवं 50 प्रतिशत महिला शिक्षक-प्रशिक्षु और द्वितीय वर्ष से 45 प्रतिशत पुरुष एवं 55 प्रतिशत महिला शिक्षक-प्रशिक्षुओं द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया।

प्रथम उद्देश्य— अध्ययन वर्ष के आधार पर प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता का मापन करना।

वर्तनी में निपुणता के मापन हेतु ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, धर्मशाला के डी. एल. एड. के प्रथम वर्ष के 5 शिक्षक-प्रशिक्षु तथा द्वितीय वर्ष के 7 शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने 25–35 के बीच अंक प्राप्त किए। परिणामस्वरूप कुल 30 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने हिंदी वर्तनी निपुणता परीक्षण में 35 से कम अंक प्राप्त किए। प्रथम वर्ष के 13 एवं द्वितीय वर्ष के 10 शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने 36–45 के बीच के अंक प्राप्त किए। अर्थात् 57.5 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने 45 से कम अंक प्राप्त किए। इसी तरह प्रथम वर्ष के 2 एवं द्वितीय वर्ष के 3 शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने 46–60 के बीच अंक प्राप्त किए। इस प्रकार केवल 12.5 प्रतिशत

तालिका 2— अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षुओं का अंक-आधारित वितरण

अंक	प्रथम वर्ष		द्वितीय वर्ष		कुल	
	संख्या	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*
25–35	05	25	07	35	12	30
36–45	13	65	10	50	23	57.5
46–60	02	10	03	15	05	12.5
योग	20	100	20	100	40	100

तालिका 2 से स्पष्ट है कि वर्तमान अध्ययन के लिए प्रथम उद्देश्य— अध्ययन वर्ष के आधार पर प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा शिक्षक-प्रशिक्षुओं ने 46 से अधिक अंक प्राप्त किए। संकलित प्रदत्तों के इस वर्णन को आरेख 2 में इस प्रकार दर्शाया गया है—

आरेख 2— प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षुओं की अंक-आधारित आरेखीय प्रस्तुति

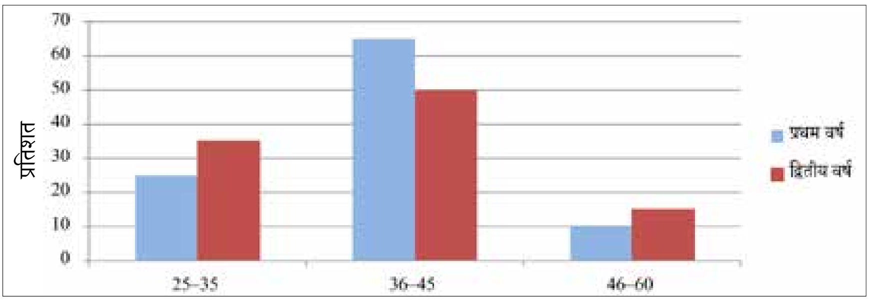

द्वितीय उद्देश्य— प्रादेशिकता के आधार पर प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं की हिंदी वर्तनी की निपुणता में अंतर का अध्ययन करना।

तालिका 3— प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के शिक्षक-प्रशिक्षुओं का प्रादेशिकता-आधारित वितरण

प्रादेशिकता	प्रथम वर्ष		द्वितीय वर्ष		कुल	
	संख्या	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*	*संख्या*	*प्रतिशत*
शहरी	06	30	08	40	14	35
ग्रामीण	14	70	12	60	26	65
	20	100	20	100	40	100

तालिका 3 में द्वितीय उद्देश्य— प्रादेशिकता के आधार पर प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी वर्तनी की निपुणता में अंतर का अध्ययन हेतु डाइट, धर्मशाला के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के शिक्षक-प्रशिक्षुओं के अध्ययन में यह पाया गया कि प्रथम वर्ष के 6 एवं द्वितीय वर्ष के 8 शिक्षक-प्रशिक्षु शहरी क्षेत्र से संबंधित हैं अर्थात् कुल 35 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी पर शहरी विकास एवं भाषिक व्यवहार का प्रभाव है। प्रथम वर्ष के 14 तथा द्वितीय वर्ष के 12 शिक्षक-प्रशिक्षु ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित हैं अर्थात् कुल न्यादर्श के 65 प्रतिशत भाग पर ग्रामीण क्षेत्र की बोली का प्रभाव उनकी हिंदी भाषा वर्तनी पर पड़ता है। इस प्रकार, शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी की निपुणता पर उनकी प्रादेशिक भाषा का अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है। इस प्रादेशिकता-आधारित वितरण को आरेख 3 द्वारा दर्शाया गया है—

आरेख 3— प्रथम एवं द्वितीय के शिक्षक-प्रशिक्षुओं का प्रादेशिकता-आधारित वितरण

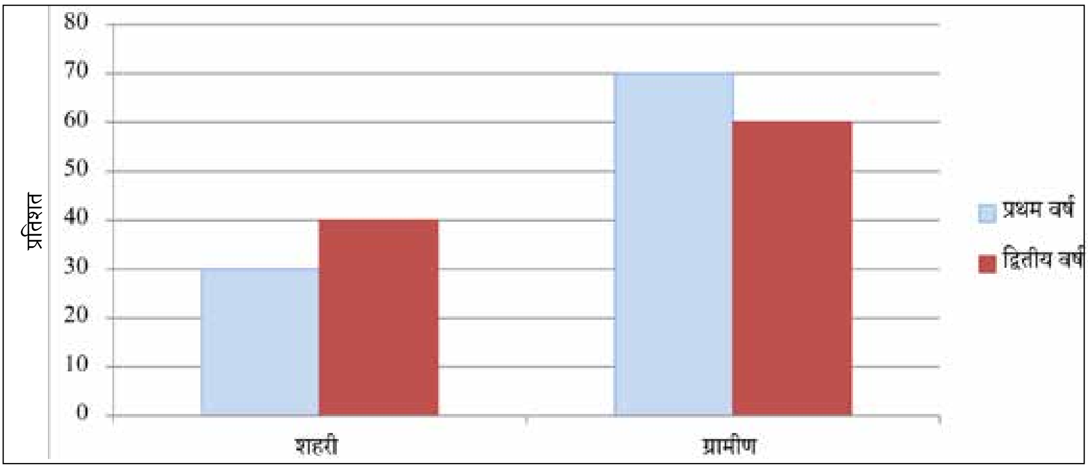

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी निपुणता को उनके जेंडर, अंकों एवं प्रादेशिकता के आधार पर दर्शाया गया है। शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा संबंधी निपुणता पर उनके प्रादेशिक वातावरण में प्रयुक्त भाषा तथा शिक्षक-प्रशिक्षुओं के जेंडर का महत्वपूर्ण प्रभाव देखा जा सकता है और इसी आधार पर उनके अंकों में भी परिवर्तन देखा जा सकता है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी निपुणता का अध्ययन एवं मापन करने के लिए जो हिंदी वर्तनी निपुणता परीक्षण पत्र का प्रशासन किया गया, उसमें प्राप्त परिणाम इस अग्रलिखित हैं—

- शिक्षक-प्रशिक्षुओं की भाषा ज्ञान एवं वर्तनी निपुणता में कमी का मुख्य कारण स्वर एवं व्यंजनों के ज्ञान की कमी, मात्राओं के उचित प्रयोग से अनभिज्ञता तथा उनके व्यावहारिक प्रयोग की कमी है। वे ब-व, श-स, ड-ढ आदि के शुद्ध प्रयोग से अवगत नहीं हैं। साथ ही उनमें संदेहात्मक व्यवहार से प्रतीत होता है कि इन सभी के प्रयोग के लिए अभ्यास कार्य की कमी भी पाई गई है।
- शिक्षक-प्रशिक्षुओं में व्याकरण के ज्ञान की कमी के कारण भी वह शुद्ध भाषिक प्रयोग में असमर्थ रहते हैं।
- शिक्षक-प्रशिक्षुओं में अनुस्वार अर्थात् 'अं' तथा अनुनासिक स्वर अर्थात् 'अँ' के सही प्रयोग के ज्ञान की कमी के कारण वे इन ध्वनियों में भेद करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं।
- शिक्षक-प्रशिक्षुओं में संयुक्ताक्षर एवं द्वित्व व्यंजनों के अर्थ एवं उनमें भेद क्षमता की कमी पाई गई है। ये शिक्षक-प्रशिक्षु ध्वनियों की पहचान में अक्षम तथा उच्चारण ध्वनियों में भेद करने में असमर्थ हैं।
- इन शिक्षक-प्रशिक्षुओं पर प्रादेशिकता का भी प्रभाव देखा गया है। प्रशिक्षुओं को दिए गए अनुच्छेद में शुद्धिकरण करने के लिए कहा गया था जिस पर प्रशिक्षुओं ने मानक भाषा के स्थान पर प्रादेशिक बोली के शब्दों का प्रयोग किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि इन शिक्षक-प्रशिक्षुओं की भाषा पर प्रादेशिक बोली का प्रभाव पड़ता है।
- कुछ प्रशिक्षुओं ने भाषा निपुणता परीक्षण में अपनी लापरवाही एवं भाषा अज्ञानता का परिचय देते हुए साधारण सी त्रुटियाँ की हैं जो उचित ध्यान न देने की वजह से की गई हैं।
- कई शिक्षक-प्रशिक्षुओं में भाषा व्याकरण एवं विराम चिह्नों के उचित प्रयोग संबंधी ज्ञान की कमी अनुभव की गई, जिसमें प्रशिक्षुओं को अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न तथा पूर्ण विराम संबंधी त्रुटि करते हुए पाया गया।
- शिक्षक-प्रशिक्षुओं में भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों, वाक्यों एवं अनुच्छेदों पर लिंग, वचन एवं विभक्ति के प्रभाव के ज्ञान की कमी भी पाई गई है।
- किसी भी भाषा के ज्ञान की सुदृढ़ता उसके रचनात्मक पक्ष में दिखाई देती है। प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं में भाषिक ज्ञान की कमी के कारण रचनात्मक क्षमता में भी कमी पाई गई। यह रचनात्मक क्षमता ही प्रशिक्षुओं में सृजन क्षमता का विकास करती है। परंतु इन शिक्षक-प्रशिक्षुओं

द्वारा कहानी लेखन में की जाने वाली त्रुटियों एवं अज्ञानता के आधार पर कहा जा सकता है कि इन भावी शिक्षकों में भाषिक विकास की महत्वपूर्ण कड़ी कहानी लेखन की कला में कमी ही उन्हें एक सफल शिक्षक बनने में परेशानी उत्पन्न कर सकती है।

इन उपरोक्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी निपुणता की वर्तमान स्थिति काफ़ी शोचनीय है। इस निम्न वर्तनी निपुणता के साथ शिक्षण के क्षेत्र में उच्च परिणाम पाना असंभव है। शिक्षक-प्रशिक्षुओं को उनकी भाषा वर्तनी में निपुणता एवं निखार लाना आवश्यक है ताकि वे अपने विद्यालयी विद्यार्थियों की हिंदी भाषा संबंधी वर्तनी निपुणता को बढ़ा सकें।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी निपुणता का अध्ययन एवं जाँच की गई है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि इन प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता की अत्यधिक कमी उनके शिक्षण शास्त्र के मार्ग में एक रोड़ा साबित हुई है। इन सभी अशुद्धियों एवं त्रुटियों के साथ शिक्षक-प्रशिक्षु अपने विद्यार्थियों की भाषिक समस्याओं एवं शुद्ध और उचित मार्गदर्शन देने में असमर्थ होंगे जिसके कारण विद्यालयी विद्यार्थियों में हिंदी भाषिक वर्तनी में निपुणता की कमी पाई जाएगी। इस प्रकार, इन शिक्षक-प्रशिक्षुओं को भाषा के व्यावहारिक प्रयोग का अत्यधिक अभ्यास करवाना चाहिए। हिंदी भाषा विज्ञान का संपूर्ण ज्ञान दिया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यकाल के दौरान भाषा के गद्य, पद्य एवं व्याकरण पक्ष का भी ज्ञान दिया जाना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण एवं वर्तनी का समय पर संशोधन एवं उपचार किया जाना चाहिए जिसके लिए प्रशिक्षण काल में अतिरिक्त समय भी निश्चित किया जाना चाहिए। प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिंदी भाषा वर्तनी में निपुणता लाने के लिए उनके शिक्षकों में वर्तनी निपुणता का होना अति आवश्यक है। सरकार को इस संबंध में उचित नीतियाँ बनाकर आवश्यक सुधार लाने चाहिए।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो रहा है कि प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षुओं में हिंदी भाषा वर्तनी निपुणता की वर्तमान स्थिति बहुत शोचनीय है जिसे सुधारने के लिए हमें सजग होना पड़ेगा। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षक-शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक छात्राध्यापक को उनके भाषायी ज्ञान को इस प्रकार समर्थ बनाना है कि उनमें भाषायी दक्षता का आधार ठोस हो। जब तक शिक्षकों में शुद्ध वर्तनी का प्रचलन नहीं होगा, वह अपने विद्यार्थियों के भाषिक कार्यों का उचित संशोधन नहीं कर सकेंगे। प्रशिक्षण काल के दौरान ही शिक्षक-प्रशिक्षुओं को उनकी भाषा वर्तनी संबंधी त्रुटियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण दिया जाना चाहिए। शुद्ध वर्तनी के लिए शुद्ध उच्चारण, हिंदी व्याकरण का ज्ञान, मानक भाषा का अभ्यास, हिंदी ध्वनियों एवं मात्राओं की सही पहचान प्रयोग, लेखन अभ्यास की प्रचुरता का होना अति आवश्यक है। अध्यापकों द्वारा प्रेरणात्मक व्यवहार एवं सहयोग भी इस दिशा में कारगर सिद्ध होता है। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा में

अध्यापक की भूमिका उन्हें ज्ञान देने के साथ-साथ इस योग्य बनाना होता है कि वे स्वयं ज्ञान का सृजन कर अपनी रचनात्मक शक्तियों को प्रस्तुत कर सकें। जिसके लिए अध्यापक विद्यार्थियों की बौद्धिक जिज्ञासा को प्रेरित करें, उनकी भाषिक एवं संप्रेषणीय योग्यता का विकास करें। साथ ही उनमें वैज्ञानिक अभिवृत्ति को उजागर करें ताकि वह वर्तनी के शुद्ध प्रयोग में आगे बढ़ सके। इस प्रकार शिक्षकों एवं शिक्षक-प्रशिक्षुओं की हिंदी वर्तनी में निपुणता लाते हुए समाज में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की वर्तनी शुद्धता को प्राप्त किया जा सकता है। यह उनके बहुमुखी विकास में प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

संदर्भ

अंदलीब. 2018. हिंदी माध्यम के शिक्षक-प्रशिक्षुओं की वर्तनीगत अशुद्धियों के निराकरण हेतु उपचारात्मक हस्तक्षेप कार्यक्रम के प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन. *प्राथमिक शिक्षक*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, जुलाई 2018, 42 (अंक 3). www.ncert.nic.in>pdf से प्राप्त किया गया है।

कुमार, कृष्णा. 2018. *बच्चे की भाषा और अध्यापक*. पृष्ठ संख्या 49–57. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली.

केजक्लेर, व. और बी. हाल. 2012. लैंग्वेज इन प्राइमरी क्लासरूम: ए स्टडी ऑफ़ न्यू टीचर्स केपेबिलिटी एंड प्रैक्टिस. *लैंग्वेज़ अवेयरनेस*, मई 2012, वॉल्यूम 21, 1–2, पृष्ठ संख्या 15–32. https://www.researchgate.net/publication/254330593 से प्राप्त किया गया है।

दहिया, इंदु. 2014.वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के उपचारीकरण में अध्येता-केंद्रित तथा कार्यकलाप-आधारित अधिगम-अध्यापन उपागम की प्रभावशीलता का प्रायोगिक अध्ययन. *अन्वेषिका– भारतीय अध्यापक शिक्षा की शोध पत्रिका*, www.ncte-india.org/ncte-new से प्राप्त किया गया है।

प्रधान, भा., और जी. शर्मा. 2013. डायग्नोस्टिक इवैल्युएशन एंड रेमेडीयल प्रोग्राम फ़ॉर इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग टू प्रोस्पेक्टिव टीचर्स. *रिसर्च एनालिसिस एंड इवैल्युएशन*, दिसंबर 2013, वॉल्यूम 5, 51, पृष्ठ संख्या 22–24. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/browse?type=title&rpp=20&offset=69291. पर देखा गया।

भाटिया, के. 2019. *हिंदी की मानक वर्तनी*. पृष्ठ संख्या 15–39. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.

मंगल, उमा. 2012. *हिंदी शिक्षण*. पृष्ठ संख्या 1–30. आर्य बुक डिपो, नयी दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली. www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/ncf_hindi_2005/ncf2005.pdf पर देखा गया।

वाजपेयी, किशोरीदास.1968. *हिंदी शब्दानुशासन*. पृष्ठ संख्या– 378. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी.

सिंह, प. 2001. *डेवलपमेंट ऑफ़ ए रेमेडीयल प्रोग्राम इन टीचिंग ऑफ़ हिंदी एट प्राइमरी स्कूल लेवल*. डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/170030/1/01_title.pdf से प्राप्त किया गया है।

सेतिनाव्की, यू.आर. और ए. यावुज. 2010. लैंग्वेज प्रोफ़िशिएंसी लेवल ऑफ़ इंग्लिश लैंग्वेज टीचर ट्रेनिज़ इन टर्की. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन टीचर एजुकेशन*. 2010, 1, पृष्ठ संख्या. 26–54. https://ijrte.eab.org.tr/1/4/3_ugurrecepcetinay.pdf पर देखा गया।